

उत्तराखण्ड आन्दोलनों में स्त्रियों की भूमिका : सामाजिक नवनिर्माण से राज्य निर्माण तक महिलाओं का बहुआयामी संघर्षों का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

शोधनिदेशक:- डॉ० डी० कें० चन्दोला

सहायक प्रोफेसर

राजनीति विज्ञान विभाग

राजकीय महाविद्यालय, दन्वा, अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड

शोधार्थी:-अजय सिंह

शोध अध्येता, राजनीति विज्ञान विभाग,

हेमवती नन्दन बहुगुणा राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय खटीमा (ऊधम सिंह नगर),

कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल (उत्तराखण्ड)

सारांश:-उत्तराखण्ड राज्य का गठन 9 नवम्बर, 2000 में हुआ। यह राज्य अपने एक स्वतः निर्मित आन्दोलन का परिणाम है। उत्तर प्रदेश में रहते हुए इस राज्य के पर्वतीय भाग के लोगों ने हमेशा अपने आपको उपेक्षित महसूस किया और सरकारी नीति योजनाओं में हमेशा उत्तराखण्ड के पर्वतीय भाग को ठगा से महसूस किया। जिसको दूर करने के लिए यहां के जनमानस ने एक आन्दोलन को जन्म दिया जिससे आन्दोलनों के इतिहास में उत्तराखण्ड राज्य आन्दोलन के नाम से जाना जाता है। उत्तराखण्ड राज्य आन्दोलन की अवधि 1897 से वर्ष 2000 तक रही जो उत्तराखण्डवासियों के लिए संघर्ष का समय रहा। आरम्भ में उत्तराखण्ड राज्य आन्दोलन पुरुषों के माध्यम से संचालित रहा किन्तु बाद में महिलाओं ने पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर आन्दोलनों को सक्रिय बनाया। उत्तराखण्ड राज्य आन्दोलन जब अपने चरम सीमा था तो महिलाएं भी आन्दोलन में पूर्ण रूप से कूद पड़ीं। खेत-खलियानों, बूल्ह-चौक को छोड़ कर सड़कों पर उतर आयी थीं। घरना प्रदर्शन स्थल, जुलूस-रैली में पूर्ण रूप से भागीदारी की। महिलाओं ने अलग राज्य के लिए आन्दोलन की प्रथम पंक्ति में खड़ी रही। खटीमा काण्ड, रामपुर तिराहा काण्ड और तिलाठी काण्ड, मसूरी काण्ड आदि में महिलाओं की शहादत और भागीदारी ने गौरवमय इतिहास रचा है। अतः उत्तराखण्ड राज्य आन्दोलन में महिलाओं की विशेष भूमिका रही है। बिना महिला भूमिका के उत्तराखण्ड राज्य को एक पृथक राज्य का दर्जा मिलना संभव नहीं था महिला आन्दोलनों की तत्पस्ता ने आन्दोलन को तीव्र गति मिली थी। प्रस्तुत शोध पत्र में उत्तराखण्ड आन्दोलनों में स्त्रियों की भूमिका में आन्दोलनों में महिलाओं के संघर्ष, समर्पण, त्याग और उनके प्राणों की आहुति का उल्लेख करता है।

सूचक शब्द:- पर्वतीय क्षेत्र, संघर्ष, सांस्कृतिक अस्मिता, राज्य आन्दोलन,

प्रस्तावना:- उत्तराखण्ड: उत्तर प्रदेश के पश्चिम और उत्तर दिशा में स्थित है। उत्तराखण्ड गठन से पूर्व यहाँ आठ पर्वतीय जिला हुआ करते थे। उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ में है। जो कि उत्तराखण्ड से सैकड़ों किलोमीटर दूर था। जनप्रतिनिधि और मुख्यमंत्री पहाड़ चढ़ने के नाम से ही सांस फुलाने लगती है। तो यहां का विकास दूर की बात थी। उत्तर प्रदेश सरकार ने पर्वतीय जिलों के लिए ना कोई पृथक नीति और ना ही कोई पृथक नियोजन बनायी गयी थी जिससे यहां के लोगों को मूलभूत सुविधा मिल पाये। उत्तराखण्ड एक पर्वतीय प्रदेश होने के कारण यहां का जीवन यापन करने के लिए संघर्ष करना पड़ता है। यहां के लोग कृषि पर आधारित रहते थे। आजादी के बाद से उत्तर प्रदेश में विभिन्न दलों की सरकार समय समय पर शासन करती रही लेकिन उत्तराखण्ड के विकास के लिए यहां की लोगों ने हमेशा ठगा सा महसूस किया। क्योंकि इन सरकारों ने उत्तराखण्ड के लिए कोई ठोस नीति व निर्णय लेने से बचें। पर्वतीय प्रदेश होने के कारण यहां के लोग मूलभूत विकास से दूर ही रहे। विकास की चाल कछुए की चाल से पहाड़ों की चढ़ाई कर रहा था। सड़क, शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाएं व रोजगार जैसे मूलभूत विकास कार्य ना मिलने से पहाड़ में एक बहुत बड़ी समस्या को भी जन्म दिया वह है पलायन, आज भी एक बड़ी चुनौति बनी हुई है। सरकारी कर्मचारी का व्यवहार भी यहां के लोगों के प्रति अच्छा नहीं रहता था जिस कारण लोगों का विश्वास सरकारी कर्मचारीयों पर नहीं रहता था ये सरकारी कर्मचारी भ्रष्टाचार व सरकारी योजनाओं में लापरवाही कर रहे थे। कई दशकों तक उत्तराखण्ड की जनता मूलभूत विकास से वंचित रही। यहां की जनता उत्तर प्रदेश सरकार से विकास का लेकर व राजनीतिक नेतृत्व को लेकर उपेक्षित रहे। अतः लोगों का सब का सब टूट गया लोग आक्रोश हो कर उत्तर प्रदेश सरकार से पृथक राज्य की मांग करने लग गये। उत्तराखण्ड पृथक राज्य आन्दोलन में उत्तराखण्ड के युवा, महिला, पुरुष, पत्रकार, शिक्षक, बच्चे, भूतपूर्व सैनिक और समाजिक कार्यकर्ता

आदि सभी ने आन्दोलन का सफल बनाने में महत्वपूर्ण योगदान रहा था। यह आन्दोलन उत्तराखण्ड को पृथक सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक व राजनैतिक पहचान दिलाने के लिए किया जा रहा था। उत्तराखण्ड पृथक राज्य आन्दोलन को सर्वोच्च तक ले जाने तथा उसको सफल बनाने के लिए महिलाओं की भूमिका ऐतिहासिक रही है।

उत्तराखण्ड में स्त्रियों का जीवन :-

उत्तराखण्ड एक पहाड़ी राज्य है साथ ही विशिष्ट भौगोलिक परिस्थितियाँ भी हैं। इसलिए यहाँ की महिला पहाड़ की रीढ़ की हड्डी कहलाती है। क्योंकि उत्तराखण्ड में महिला ही घर और खेतों व दूसरे सभी कार्य करती हैं। उन्हें उच्च पर्वतों की कठोरता ने उनके जीवन के अन्दर दृढ़ता, साहस, कर्मठता, निर्भीकता व कष्टमय जीवन में भी अपने कर्तव्य के प्रति सचेत रहने की शक्ति प्रदान करती है। उत्तराखण्ड का अधिकांश भाग पर्वतीय है। यहाँ का जीवन संघर्षमय होता है। उत्तराखण्ड में महिलाओं का स्थिति बेहतर नहीं हुआ करती थी वे घर, खेतों व रोजमर्रा के कार्यों में ही लगी रहती हैं। उत्तराखण्ड की महिला का स्वभाव से सहनशील, साहसिक, मेहनती और सरकारी से सजायी रहती है। साथ ही वे परम्पराओं और अपने पर्यावरण को महत्व देते हुए उनका पोषण भी करती हैं। कई दशकों तक महिला शिक्षा से दूर ही रही या कह सकते हैं कि उनकी शिक्षा से दूर रखा। क्योंकि घर के काम व खेतों के काम व मवेशी के देख रेख के कारण वे स्कूल की बैठक तक नहीं पहुँच पाये। पर्वतीय क्षेत्रों की महिलाएँ अशिक्षित, गरिमापूर्ण जीवन का अभाव, स्वास्थ्य सेवाओं का अभाव व रूढ़ीवादीता में अपना सम्पूर्ण जीवन व्यतीत करती थीं।

उत्तराखण्ड में महिलाओं द्वारा सामाजिक आन्दोलनों में नेतृत्व:-

उत्तराखण्ड की महिलाओं का सम्पूर्ण जीवन रोजमर्रा के कार्यों में ही व्यतीत करते थे। वे सामाजिक, शैक्षणिक, राजनैतिक व आर्थिक रूप से पिछड़े थे। शिक्षा की भारी कमी व सामाजिक रूढ़ीवादीता के बन्धन में ही बन्दी रही। जिस कारण वे समाज के मुख्यधारा में जुड़ने में काफी कष्ट लग गया। महिलाओं के सम्मुख शिक्षा पाने, आर्थिक समानता, बाल विवाह, कम उम्र में विधवा, सामाजिक रूढ़ियों को तोड़ने और अपने अधिकारों को पाने आदि प्रमुख चुनौतियाँ थीं। उत्तराखण्ड में सामाजिक चेतना जागृत करने के लिए सुश्री मंगला देवी उपाध्याय का अहम योगदान रहा है। उनके द्वारा जब टिहरी रियासत भारत में विलय के बाद क्षेत्र के सर्वप्राणी प्रगति के लिए महिला मंडल दलों का गठन किया था। उत्तराखण्ड का अधिकांश भाग पहाड़ी है। जीवन यापन करने का मात्र साधन खेतीबाड़ी, पशु पालन व जंगलों पर ही निर्भर रहते थे रोजगार और स्वरोजगार के साधनों का विकास अभी अल्प नही हुए थे लेकिन 1980 के दशक में शराब माफिया अपने पैर पहाड़ों फँसा रहा था। जिसके साथ में यहाँ के पुरुष और युवा भारी मात्रा में नशे की लत लग गयी। जिससे पारिवारिक कलह और लड़ाई झगड़े होते जा रहे थे। शराब माफियाओं के खिलाफ महिलाओं ने ऐतिहासिक अभियान छेड़ दिया। इस अभियान में सबसे पहले रेखा उनियाल ने धुनार खोला (श्रीनगर) से घर घर जा कर शराब बंदी के लिए कार्य का आरम्भ किया। इनके अभियान में चांदनी, शकुलता देवी, देवेश्वरी खण्डूरी, आदि थीं। 1968 में टिहरी निवासी श्रीमति हेमा देवी ने मगनिपेथ आन्दोलन की सामाजिक पहल की शुरुआत की। मगनिपेथ महिला द्वारा संचालन होने वाला बड़ा आन्दोलन बन गया। पुलिस प्रशासन के द्वारा आन्दोलन का दमन करने के लिए लाठी बरसाने पर भी महिलाएँ झुकी नहीं। अल्मोड़ा में 1984 के शराब निलामी के विरुद्ध महिलाओं आगे आये व पुलिस से झड़प हुयी तो 15 महिलाओं की गिरफ्तार कर लिया गया। इस आन्दोलन का प्रबल नेतृत्व कला कांडपाल कर रही दी। पुनः 1986 में उत्तराखण्ड संघर्ष गृहनी द्वारा इस आन्दोलन का क्रियाशील बनाया जिसमें उन्होंने नारा दिया "नशा नहीं रोजगार दो" पहाड़ों में शराब नीति के खिलाफ महिलाओं की लगातार मांग करती थी कि पहाड़ों में शराब ना परोसी जाये। इसके खिलाफ उत्तराखण्ड के पर्वतीय जिले चमोली, उत्तरकाशी, पौड़ी, अल्मोड़ा, आदि स्थानों पर महिलाओं द्वारा लगातार आन्दोलन करके सरकार खिलाफ अपना रोष प्रकट किया। आजादी से पूर्व 1940 में चंबा में, नव जागरण समिति चंबा(टिहरी) द्वारा मगनिपेथ कार्यक्रम किया गया था जिसमें महिलाओं को शराब के खिलाफ आवाज उठाने की शक्ति मिली। महिलाओं द्वारा अपने ही परिवार से शुरू करने शराब विरोधी आवाज के बुलन्द किया। शराब के विरुद्ध यह आन्दोलन आज भी उत्तराखण्ड की महिलाओं संघर्ष को देखा सकते हैं।

विश्वविद्यालय आन्दोलन में महिलाएँ:-

विश्वविद्यालय आन्दोलन 1971 में उत्तराखण्ड विश्वविद्यालय संघर्ष समिति के स्वामी मन्मथन के दिशा निर्देश में चला। स्वामी मन्मथन को विश्वविद्यालय आन्दोलन का सूत्रधार कहा जाता है। स्कूली शिक्षा पूर्ण होने के बाद यहाँ के युवाओं उच्च शिक्षा के दूर शहरों कानपुर, आगरा, लखनऊ आदि शहरों में जाना होता था। राज्य में जो महाविद्यालय थे वे मेरठ से(देहरादून महाविद्यालय) तथा आगरा से(कुमाऊँ महाविद्यालय) संचालित होते थे। जो पर्वतीय क्षेत्रों से दूर थे तथा युवाओं पर आर्थिक बोझ भी लद जाता था। विश्वविद्यालय मांग आन्दोलन में क्षेत्रीय जनता ने आन्दोलनकारियों को सम्पूर्ण सहयोग प्रदान किया। महिलाओं की भागीदारी से आन्दोलन और ज्यादा सक्रिय तथा तीव्र हो गया। विश्वविद्यालय मांग आन्दोलन में महिलाओं ने नारीशक्ति का बखूबी प्रदर्शन दिखाया है। उन्होंने पुरुषों के साथ कदम से कदम मिला कर चला रहे थे। लेकिन आन्दोलन में एक बड़ी समस्या जन्म ले रही थी कि विश्वविद्यालय कहा बनाया जाये। इसको लेकर दोनों मण्डलों

में विवाद होने लगा गया। इसी समस्या के कारण विश्वविद्यालय के लिए एकमत नहीं हुये। हालांकि 1970 में डी0 चटर्जी की अध्यक्षता में विश्वविद्यालय के धन हेतु विशेषज्ञ समिति बनायी गयी जिसने अपनी रिपोर्ट में विश्वविद्यालय बनाने के लिए श्रीनगर का चयन किया। अब आन्दोलन और जोर पकड़ने लग गया 16 सितम्बर 1971 समुचे श्रीनगर व कीर्ति नगर, विश्वविद्यालय की मांग को लेकर बंद रहे। यह विश्वविद्यालय के लिए चमोली, पीढ़ी, उत्तरकाशी और टिहरी में आन्दोलन होने लग गये। इसी आन्दोलन के दिन से श्री बैजनाथ तामर, शिवचरण, गिरधारी मिश्र, जय सिंह, मुताडीलाल, कैलाश जुगरान एवं रेवतीनदन बहुगुणा गढ़वाल महाविद्यालय के प्रगण निश्चित काल के मुख्य हड़ताल शुरू कर दी। 30 जुलाई, 1971 को पुरुषों के साथ पांच महिला आन्दोलनकारी भी भूख हड़ताल का हिस्सा बनीं। अन्य महिला गांव गांव जा कर जन जागरण करते तथा साथ ही आन्दोलन के लिए गांव से चंदा भी एकत्रि करके समिति के पास जमा कर देते। शिक्षा की महत्ता को समझने व अपने अधिकारों और हकों की लड़ाई में महिलाएं प्रचंड संख्या में आगे आयीं। महिलाओं ने प्रदर्शन, घरना व भूख हड़ताल आदि के माध्यम से आन्दोलन में सक्रिय भागीदारी की उपस्थिति दर्ज करायी। लम्बे संघर्ष के बाद केन्द्र सरकार मान गयी स्वयं प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी श्रीनगर आकर विश्वविद्यालय श्रीनगर में स्थापित करने की घोषणा की। 1 दिसम्बर 1973 को गढ़वाल विश्वविद्यालय की विधिवत स्थापना हुई। विश्वविद्यालय आन्दोलन को सफल बनाने में जितना योगदान पुरुषों का है उतना ही महिलाओं का भी है।

पर्यावरण आंदोलन में महिलाएं

उत्तराखंड के अधिकांश हिस्सा पर्वतीय है यहां के लोग खेतों बाड़ी व जंगलों पर निर्भर रहते हैं या कह सकते हैं कि यहां के लोगों का जीवन का आधार प्राकृतिक संसाधनों पर ही निर्भर है जल, जंगल व जमीन का संरक्षण, प्रबंधन, सुरक्षा और बेहतर वैज्ञानिक तरीकों से करते हैं। स्थानीय लोगों को वनों के संरक्षण, वनों के अधिकार को लेकर तथा पर्यावरण असंतुलन आदि को लेकर लगातार संघर्ष व जन आंदोलन होते रहे हैं जो की निम्न है।

चिपको आंदोलन यह एक विश्व प्रसिद्ध आंदोलन चमोली जनपद के जोशीमठ ब्लाक के रैनी गांव में आन्दोलन का केन्द्र था। सरकार द्वारा ठेकेदारों को ठेके पर पेड़ों को काटने का ठेका दिया था। स्थानीय महिलाओं की सूझबूझ के कारण उन्होंने, उन्हें अपने जंगलों के पेड़ करने से मना कर दिया था। ठेकेदारों खिलाफ पहले जो जोशीमठ(15.20 मार्च 1974) और 23 मार्च 1974 को गोपेश्वर में रैनी के जंगलों को ना काटने के लिए प्रदर्शन हो रहा था। यह घटना तब घटित हुआ जब सभी पुरुषों की अनुपस्थिति देख ठेकेदार गांव के जंगलों को करने चले गए। लेकिन गौरा देवी तथा बत्ती देवी, महादेवी, मसी देवी आदि अन्य महिलाओं ने पेड़ों काटने से मना कर दिया। जब महिला नहीं मान रहे थे तो ठेकेदार, वह जंगलगत के लोगों ने इनको सरकारी काम में बाधा डालने के लिए गिरफ्तार करने की धमकी दे दी। महिला अपने पशुओं का घारा, सूखी लकड़ी व सुतर(पशुओं के नीचे बिछाले) आदि के लिए अपने जंगलों को बचाना चाहती थीं। काफी जद्दोजहद करने के बाद जब ठेकेदार व जंगलगत के लोगों पेड़ करने आगे बढ़े तो महिलाएं ने पेड़ को अपने दोनों हाथों से पेड़ को पकड़ लिया। महिलाओं ने कहा पहले हमें काटो तब पेड़ों को काटो। मजबूर ठेकेदारों ने महिलाओं के जंगल के प्रति अटूट रिश्ता और साहस के आगे झुकना पड़ा। इस प्रकार रैनी गांव में उसे दिन अपने गांव के जंगलों को बचा लिया। इस आंदोलन का नेतृत्व गौरा देवी कर रही थी। जो एक अविश्वासीय प्रवास किया गया था आज यह आन्दोलन विश्व विख्यात है।

खूंघरी पैतली आंदोलन(चमोली) सरकार द्वारा यहां के बांज के जंगलों को काटने के आदेश के विरुद्ध में यहां की महिलाओं ने विरोध किया। सरकार को अपना फैसला वापस लेना पड़ा। पर्वतीय क्षेत्रों में बांज के वृक्ष बहुत महत्वपूर्ण होते हैं। बांज के वृक्ष से घारा, हल को बनाने के उपकरण, भूमि को नमी रखता व पर्यावरण अनुकूल रहता है आदि की महत्ता को देख यहां की महिलाओं ने सरकारी फरमान का विरोध किया।

मैती आंदोलन (चमोली) कल्याण सिंह रायत द्वारा 1996 अकुरीत एक विचार था। जिसके केंद्र में महिलाएं थी उनका मानना था कि महिलाएं अपने गांव के जंगलों का संरक्षण व सुरक्षा ज्यादा बेहतर तरीके से कर सकते हैं। "मैती" उत्तराखंड में इसका अर्थ होता है "मायका" अर्थात् जब किसी लड़की का विवाह हो जाता है तो वह अपने ससुराल चली जाती है तो अपने माँ बाप के घर यहां मैत या मायका बोला जाता है। इस आंदोलन की शुरुआत लड़की के विवाह के समय एक वृक्ष रोपण से किया। तब से यह प्रथा चली आ रही। मायका पक्ष द्वारा उस वृक्ष का ध्यान रखना उनके जिम्मे होता है। एक तरह से यह आंदोलन भावनात्मक रूप से जुड़ा हुआ था। उत्तराखण्ड में कई आंदोलन हुये जिन्होंने महिलाओं को प्रकृति प्रेमी व प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण हेतु अग्रदूत के रूप में ख्याति दिलाई।

उत्तराखंड पृथक राज्य आंदोलन में महिलाएं

1970 के दशक के बाद उत्तराखंड पृथक राज्य आंदोलन के लिए विभिन्न जगह पर घरना प्रदर्शन, भूखा हड़ताल तथा जन जागरण शुरू हो चुके थे। उत्तराखंड के लोगों के द्वारा अपने मूलभूत मांगों को लेकर उत्तर प्रदेश सरकार तथा केंद्र सरकार

से मांग कर रहे थे। उत्तराखण्ड एक पर्वतीय प्रदेश है। यहां की भौगोलिक परिस्थितियां उत्तर प्रदेश से भिन्न हैं। उत्तराखण्ड की अपनी संस्कृति व सामाजिक संरचना है जो उत्तर प्रदेश बिल्कुल भिन्न है। यह विकास का पैमाना भी उत्तराखण्ड व उत्तर प्रदेश से अलग है। इसलिए यहां के बुद्धि जीवियों ने पृथक राज्य के लिए एक आंदोलन "उत्तराखण्ड पृथक राज्य आंदोलन" कि शुरुआत की नींव रखी। हालांकि यह कोई नवीन आंदोलन नहीं था यह शनै-शनै चल रहा था। शुरुआत में उत्तराखण्ड पृथक राज्य आंदोलन की मांगों को लेकर अमूमन पुरुष आंदोलन में रहते थे उत्तराखण्ड राज्य आंदोलन में विभिन्न समितियां, रैलियां निकाली गयीं, घरना-प्रदर्शन, संगठनों का निर्माण, भूख हड़ताल व क्षेत्रीय राजनीति दलों द्वारा समय-समय पर उत्तराखण्ड पृथक आंदोलन की मांग उठाते रहे। उत्तराखण्ड पृथक राज्य मांग उत्तर प्रदेश सरकार तथा केंद्र सरकार से करते रहते थे। उत्तराखण्ड पृथक राज्य आंदोलन में जनमानस को भी धीरे-धीरे जोड़े जा रहा था साथ ही लोगों को अलग राज्य की महत्ता बताया जा रहा था। उन में राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक आदि क्षेत्रों की चेतना को जागृत किया जा रहा था। इसी जन चेतना व जन जागरण से प्रेरित होकर महिलाएं भी उत्तराखण्ड पृथक राज्य आंदोलन में कूद पड़ी। उत्तराखण्ड पृथक राज्य आंदोलन 1990 के दशक में ओर ज्यादा तीव्र व उग्र रूप से होने लग गया। प्रथम बार ऐसा हुआ जब उत्तराखण्ड की महिलाएं एकजुट होकर उत्तराखण्ड पृथक राज्य की मांग के लिए एकत्रित हुईं है यह आंदोलन लोकतांत्रिक अधिकारों को लेकर थी। यह स्मरण रहे कि पर्वतीय महिला अभी तक आन्दोलनों भाग नहीं लिया था। यहां की महिला स्वभाव से शांतप्रिय व भावनात्मक होती है। आगे आंदोलन में जो घटनाएं उनके साथ हुईं उनको कभी इसका अंदाजा नहीं था की कभी उनके साथ ऐसा भी होगा। उत्तराखण्ड पृथक राज्य आंदोलन का की शुरुआत सर्वप्रथम 7 अगस्त 1994 को जब उत्तराखण्ड की जनता पृथक राज्य आंदोलन के लिए पौड़ी में अनशन कर रहे थे तो पुलिस द्वारा उन पर लाठी चरसा दी गई इस समय सभा में महिलाएं भी मौजूद थी पुलिस द्वारा उनके साथ भी क्रूरता किया गया। अब यह तो निश्चित हो चुका था कि उत्तराखण्ड की जनता पृथक राज्य ले लेकर ही मानेंगे।

गढ़वाल तथा कुमाऊं में आंदोलन को ओर अधिक शक्तिशाली बनाना। जिससे सरकार पर पृथक राज्य मांग का दबाव बना सके। इसी के चलते सन 1 सितंबर 1994 को भूतपूर्व सैनिकों द्वारा खटीमा तहसील में रैली का आयोजन किया गया था जिसमें भूतपूर्व सैनिक के साथ स्थानीय लोग व महिलाएं भी शामिल थी। रैली का आयोजन शांतिपूर्ण चला रहा था तभी पुलिस प्रशासन द्वारा आंदोलनकारी पर गोली चला दी गई। जिसमें कई आन्दोलनकारियों को पुलिस के गोली का शिकार होना पड़ा। वहीं महिलाएं गंभीर रूप से घायल हो गए। प्रशासन की क्रूरता देखकर लोगों के मन में ओर आक्रोश फैल गया। खटीमा गोलीकांड को लेकर मसूरी में बैठे वरिष्ठ आंदोलनकारी को धरना स्थल से गिरफ्तारी से आक्रोशित जनता ने जुलूस निकाला तो पुलिस द्वारा गोलीयां चला दी गईं हैं। जिसमें दो महिला आंदोलनकारी श्रीमती हंस धनाई व श्रीमती बेतमती चौहान ने अपना अमूल्य जीवन बलिदान देकर उत्तराखण्ड आंदोलन को चरम उत्कर्ष पर पहुंचा दिया। खटीमा गोली कांड व मसूरी गोलीकाण्ड सितंबर माह के प्रथम दो दिवस में उत्तराखण्ड के इतिहास की ऐतिहासिक घटना घटित हो जाती है। जो संपूर्ण उत्तराखण्ड को जनता को सोचने पर मजबूर कर देते हैं कि प्रशासन कैसे महिलाओं पर डंडा व गोली चला सकते हैं वो भी निहत्ते आन्दोलनकारियों पर। इन दोनों घटनाओं से उत्तराखण्ड की जनता तथा विशेष कर महिलाएं को ओर सशक्त कर दिया और आगे आंदोलन पर बढ़-चढ़कर समर्थित होने लगी। इसमें कोई दो राय नहीं है कि महिलाएं के आ जाने से उत्तराखण्ड पृथक राज्य आंदोलन को ज्यादा शक्ति मिली।

जब 2 अक्टूबर 1994 को दोनों मंडलों से व दिल्ली प्रशासन के अनुमति के द्वारा गांधी जयंती के दिन "उत्तराखण्ड रैली" का आयोजन होना था रैली के सफल बनाने के लिए उत्तराखण्ड से आंदोलनकारी दिल्ली के लिए रवाना हो गईं जिसमें कुमाऊं तथा गढ़वाल की महिलाओं की संख्या अधिक थी। सभी सत्याग्रह बसों तथा गाड़ियों के माध्यम से दिल्ली जा रहे थे। जब यूपी बॉर्डर पर पहुंचे तो मुजफ्फरनगर के रामपुर तिराहा पर मध्य रात्रि को बसों को चेकिंग के बहाने रुकवा दिए गए चेकिंग के दौरान पुरुषों को अलग कर दिया गया। महिलाओं के साथ पुलिस के द्वारा अमरुत, बलात्कार व हिंसा का तांडव किया गया। इस घटना ने उत्तराखण्ड की जनता की आत्मा को झकझोर कर रख दिया। पर्वतीय महिलाएं की अस्मिता को तार-तार कर लोकतंत्र को कलंकित कर दिया। यह घटना कोई साधारण घटना नहीं थी यह घटना उत्तराखण्डवासियों के लिए ज्वालामुखी विस्फोट के तरह थी। मुजफ्फरनगर काण्ड की घटना ने उत्तराखण्ड के लोगों को एक महसूस घाव दिया है। जो आज तक भी नहीं भर। वे महिलाएं आज भी न्याय की गुहार लगा रही हैं। जिन पुलिस कर्मियों ने उनके साथ अमानवीय व्यवहार किया। इन घटनाओं के बावजूद भी महिलाओं के धैर्य में किसी प्रकार की कमी नहीं देखा गया बल्कि आंदोलन में ओर मनोयोग से महिलाएं बढ़ते चले महिलाओं के द्वारा देहरादून, ऋषिकेश और टिहरी आदि स्थानों में महिलाओं द्वारा अनशन, घरना, प्रदर्शन आदि के माध्यम से आंदोलन को ओर ज्यादा सक्रिय करने में लगे हुए थे। इन महिलाओं आंदोलनकारियों की प्रशासन से मांग की कि जब तक केंद्र सरकार उनकी मांग उत्तराखण्ड पृथक राज्य मांग को लिखित रूप में नहीं देते तब तक यह महिलाएं अपने संकल्प कायम रहेगीं। अतः 1996 में प्रधानमंत्री एचडी देवगौडा ने उत्तराखण्ड राज्य बनाने की घोषणा कर दी। 9 नवंबर 2000 को उत्तर प्रदेश से पृथक हो देश का 27वां राज्य बन गया। गईं। इन आन्दोलन में आश्चर्य की बात यह थी की इसमें युवा महिलाएं व अशिक्षित या कम पढ़ी लिखी महिलाएं का बड़ा योगदान रहा है। आन्दोलन को सक्रिय, उर्जावान और सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

निष्कर्ष

उत्तराखण्ड के सामाजिक आंदोलन या उत्तराखण्ड पृथक राज्य आंदोलन में महिलाओं की भूमिका उल्लेखनीय है। विशेषतः उत्तराखण्ड पृथक राज्य आंदोलन में महिलाओं ने अपने अदम्य साहस और शक्ति का परिचय दिया। जिसके फलस्वरूप उत्तराखण्ड राज्य का गठन हुआ। पुरुष आंदोलनकारी के साथ कन्धे से कन्धे मिलाकर आगे बढ़ते चले गये। जब तक उत्तराखण्ड राज्य गठन ना हुआ। सही मायने में उत्तराखण्ड राज्य प्राप्ति आंदोलन का इतिहास स्थानीय महिलाओं के सतत संघर्ष, त्याग, समर्पण व बलिदान की गाथा है। जो एक सतत संघर्ष की कहानी है। ये महिलाएं जिन्होंने राज्य गठन के लिए आंदोलन में नेतृत्व किया में कौशल्या डबराल, कमला पंत, सुभाषिनी बर्तवाल, शकुंतला मैटानी, सुशीला बलूनी, उषा नेगी, सुलोचना भट्ट, मनोरमा शर्मा, आशा बहुगुणा व विजयलक्ष्मी सहित हजारों लाखों गढ़वाल-कुमाऊं की महिलाओं का अतुल्य योगदान रहा है। उत्तराखण्ड के इतिहास में सभी महिला आन्दोलनकारियों का सदैव सम्मान और नारी सशक्तिकरण का प्रतिक के रूप देखा जायेगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ:-

- 1 भण्डारी चौहान डॉ० राजकुमारी, महिला आन्दोलनों का इतिहास : पर्वतीय राज्य उत्तराखण्ड के विशेष सन्दर्भ में, IOSR JOURNAL OF HUMANITIES AND SOCIAL SCIENCE , e-ISSN:2279-08837, 2019
- 2 भण्डारी, राजकुमारी: उत्तराखण्ड आन्दोलनों महिलाओं की भूमिका, प्रकाशित शोध
- 3 भट्ट, त्रिलोक चन्द्र: उत्तराखण्ड आन्दोलन, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली, 2001
- 4 घमत्याल, सोनिया: उत्तराखण्ड में सामाजिक एवं राजनीतिक आन्दोलन, JOURNAL OF ACHARAYA NARENDRA DEV RESEARCH INSTITUTE, ISSN:0976-3287, 2017
- 5 ब्रसाद, मयंक, सिद्ध, देवेन्द्र: उत्तराखण्ड में महिला प्रतिनिधित्व : संसद तथा विधान सभा के विशेष संदर्भ, राधकमल मुकजी: विन्तन परम्परा, ISSN 0974-0074, 2022
- 6 राजवार, शीला: आन्दोलन की निरंतरता, उत्तराखण्ड की महिलाएं स्थिति एवं संघर्ष, 2021
- 7 नेगी, कमला, राजवार शीला, भट्ट उषा: मुजफ्फरनगर काण्ड, "मानवीय अस्मिता का सवाल", उत्तराखण्ड की महिलाएं स्थिति एवं संघर्ष, 2014